हिदायत : क्या खुशी मिलती है तुम्हें शायरी से?

नासिर : सर की हक़ीत की तरजुमानी .... उसे इस तरह बयान करना कि उसकी आँच से दिल पिघल जाए।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए :

(क) ललित निबंध

(ख) संस्मरण (7)

munotes.in

28 Dec 23

[This question paper contains 4 printed pages.]

28 DEC 2022

Your Roll No. .....

LIBRARY Maitreyi College Chanakya Puri, New Delhi-110021

Sr. No. of Question Paper : 249 **C**

Unique Paper Code : 5205130

Name of the Paper : Hindi 'A' (Core MIL)

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : III

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिंदी निबंध यात्रा का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (12)

अथवा

उपन्यास के स्वरूप को उसके तत्वों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. 'धूप का एक टुकड़ा' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'हीली बोन की बतखें' शिल्प की दृष्टि से अत्यंत सशक्त रचना है - इस कथन पर विचार कीजिए।

3. 'करुणा' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

निबंध के तत्वों के आधार पर 'जमुना के तीरे-तीरे' निबंध की समीक्षा कीजिए।

4. 'चीनी भाई' एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है- इस कथन का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

'जिन लाहौर नइ देख्या' की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) आप सचमुच सौभाग्यशाली हैं। पहले दिन यहाँ आए और सामने घोड़ा-गाड़ी! आप देखते रहिए - कुछ ही देर में गिरजे के सामने छोटी-सी भीड़ जमा हो जाएगी। उनमें से ज्यादातर लोग ऐसे होते हैं, जो न वर को जानते हैं, न वधू को। लेकिन एक झलक पाने के लिए घंटों बाहर खड़े रहते हैं। आपके बारे में मुझे मालूम नहीं, लेकिन कुछ चीजों को देखने की उत्सुकता जीवन भर खत्म नहीं होती।

(ख) लोग कहते थे कि हीली सुन्दर है पर स्त्री नहीं है। वह बांबी क्या, जिसमें साँप नहीं बसता? ... हीली की आँखें सहसा और घनी हो आयीं-नहीं इससे आगे वह नहीं सोचना चाहती। व्यथा मरकर भी व्यथा से अन्य कुछ हो जाती है? बिना साँप की बांबी - अपरूप अनर्थक मिट्टी का दूह। यद्यपि वह याद करना चाहती तो याद करने को कुछ था, बहुत-कुछ था - प्यार उसने पाया था और उसने सोचा भी था कि अर्थ मात्र जाति है, छंद मात्र व्यक्ति है।

(ग) नासिर : अगर मुझे शेर के अलावा उतनी खुशी किसी और काम में होती तो में शायरी न करता दरअसल आज भी अगर मुझे कोई ऐसी खुशी मिल जाये तो शायरी का बदल हो तो मैं शायरी छोड़ दूँ। लेकिन शायरी से जयादा खुशी मुझे किसी और चीज में नहीं मिलती।

P.T.O.

munotes.in